अणुव्रत-आन्दोलन

15

प्रवर्तक

आचार्य श्री तुलसी

अ. भा. अणुव्रत समिति प्रकाशन

अणुव्रत-आन्दोलन में मेरा सदा से विश्वास रहा है और जब मैं इसके बहुमुखी प्रसार की चर्चाएं चारों ओर से सुनता हूँ, तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती है। इसकी सफलता का आधार यह मानता हूँ—आचार्य तुलसी के नेतृत्व में ६५० जीवन-दानी साधु इसके पीछे लगे हैं। काम तभी होता है, जब लगन से काम करने वाले कार्यकर्ता उसमें जुटें। दूसरी बात यह है—साधु-सन्तों के उपदेशों का ही असर धर्म-प्रधान भारतवर्ष के जन-जीवन पर पड़ता [illegible]

इस [illegible]
कि [illegible]
साम्प्र[illegible]
रूप ह[illegible]

[illegible]
रूप ले[illegible]
वातव[illegible]

●

हम ऐसे युग में रह रहे हैं, जब हमारा जीवात्मा सोया हुआ है। आत्मबल का अकाल है और सुस्ती का राज है। हमारे युवक तेजी से भौतिकवाद की ओर झुकते चले जा रहे हैं। इस समय किसी भी ऐसे आन्दोलन का स्वागत हो सकता है, जो आत्मबल की ओर ले जाने वाला हो। इस समय हमारे देश में अणुव्रत-आन्दोलन ही एक ऐसा आन्दोलन है, जो इस कार्य को कर रहा है। यह काम ऐसा है कि इसको सब तरफ से बढ़ावा मिलना चाहिए।

—एस० राधाकृष्णन् (राष्ट्रपति)

अणुव्रत-आन्दोलन

प्रवर्तक

आचार्य श्री तुलसी

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति प्रकाशन

प्रकाशक:—
अ० भा० अणुव्रत समिति
४०९३, नयाबाजार
दिल्ली-६

एकादशम संस्करण १०,०००
१ सितम्बर १९६४
मूल्य १५ नये पैसे

मुद्रक :
रामस्वरूप शर्मा,
राष्ट्र भारती प्रेस,
कूचा चेलान,
दरियागंज, दिल्ली-६

प्रकाशकीय

'अणुव्रत-आन्दोलन' अणुव्रत-आन्दोलन की आधारभत पुस्तिका है। इसका सही नाम अणुव्रत-आचार-संहिता होना चाहिए। इसमें आन्दोलन के समग्र नियमोपनियम मूल रूप में संगृहीत हैं। अणुव्रत-साहित्य का जो प्रासाद अब खड़ा हो रहा है, कहना चाहिए उसकी प्रथम ईंट प्रस्तुत पुस्तिका है। अणुव्रत प्रवृत्तियों का जो ताना-बाना देश भर में लग रहा है, उसका मध्य-बिन्दु प्रस्तुत पुस्तिका ही है। छोटी-सी पुस्तिका का बड़ा-सा महत्व इतने में ही व्यक्त हो जाता है कि हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, गुजराती कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओं में यह एक लाख से भी अधिक संख्या में अब तक प्रकाशित हो चुकी है और आगे से आगे इसकी खपत बढ़ती ही जा रही है।

प्रस्तुत पुस्तक में 'आदि वचन' अणुव्रत-आन्दोलन-प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का है, जो आन्दोलन की दार्शनिक पृष्ठ-भूमि को व्यक्त करता है। आन्दोलन के सम्बन्ध से उठने वाली जिज्ञासाओं का समाधान देता है। 'उद्गम और विकास' अणुव्रत परामर्शक मुनिश्री नगराजजी द्वारा लिखा गया है, जो प्रारम्भ से अब तक के ९५ वर्षों की आन्दोलन से सम्बन्धित गतिविधि का संक्षिप्त ब्यौरा देता है। कुल मिलाकर कहना

चाहिए कि प्रस्तुत पुस्तक लघुकाय होते हुए भी आन्दोलन के नियमोपनियम, उसके दर्शन और उसके इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश डाल देती है। आशा ही नहीं विश्वास है कि व्यस्तता के इस युग में प्रस्तुत लघुकाय पुस्तिका सर्व-साधारण के लिए अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित होगी।

जे० एस० जवेरी
महामंत्री
अ० भा० अणुव्रत समिति

१५ सितम्बर १९६४
बम्बई

अनुक्रम

आचार और विचार ये जहाँ दो हैं, वहाँ एक भी हैं। इनमें जहाँ पौर्वापर्य (पहिले-पीछे का भाव) है, वहाँ नहीं भी है। विचार के अनुरूप ही आचार बनता है अथवा विचार ही स्वयं आचार का रूप लेता है। आर्ष-वाणी में मिलता है—"पहले विचार और पीछे आचार।" आचार शुद्ध नहीं तो विचार कैसे शुद्ध होगा? शुद्ध विचार के बिना आचार शुद्ध नहीं बनता। आचार-विचार के अनुकूल चले, तब उनमें द्वैध नहीं रहता। विचार जैसा आचार नहीं बनता, वहाँ वे दो बन जाते हैं। अपेक्षा है, विचार और आचार में सामंजस्य आये।

कई व्यक्ति ऐसे हैं, जिनमें विचारों की स्फुरणा नहीं है, उन्हें जगाने की आवश्यकता है, कई व्यक्ति जाग्रत हैं, किन्तु उनकी गति संयम की दिशा में नहीं है, उनकी गति बदलने की आवश्यकता है। कई व्यक्ति सही दिशा में हैं, किन्तु उनके विचार केवल विचार तक ही सीमित हैं, उन्हें सावधान करने की आवश्यकता है।

मूल बात है—आचार-शुद्धि की आवश्यकता। उसके लिए विचार-क्रान्ति चाहिए। उसके लिए सही दिशा में गति और इसके लिए जागरण अपेक्षित है।

राजनीति की धारा परिस्थिति को बदलना चाहती है और वह उसको बदल सकती है। अणुव्रत का मार्ग संयम का मार्ग है।

इसके द्वारा हमें व्यक्ति को बदलना है। परिस्थिति बदले, इसमें हमारा विरोध नहीं, किन्तु उसके बदलने पर भी व्यक्ति न बदले अथवा दूसरे पथ की ओर मुड़ जाय, यह वांछनीय नहीं। सामग्री के अभाव में जो कराहता रहे, वही उसे पाकर विलासी बन जाये, यह उचित नहीं। संयम की साधना नहीं होती, तब यह होता है। संयम का लगाव न गरीबी से है, न अमीरी से। इच्छाओं पर विजय हो—यही उसका स्वरूप है। इच्छाएँ सम्भव है एक साथ नष्ट न भी हों, किन्तु उन पर अंकुश तो रहना ही चाहिए। शक्तिशाली और पूंजीपति वर्ग को इच्छाओं पर नियन्त्रण करना है और अधिक संग्रह को भी त्यागना है। गरीबों के लिए अधिक संग्रह के त्याग की बात नहीं आती, किन्तु इच्छाओं पर नियन्त्रण करने की बात उनके लिए भी वैसी ही महत्त्वपूर्ण है, जैसी धनी वर्ग के लिए है।

बड़े या उच्च कहलाने वाले वर्ग के लिए यह चुनौती है कि वह सन्तोषी बने। निम्न वर्ग स्वयं उनके पीछे चलेगा। ऐसा नहीं होता है, तब तक देखा-देखी या स्पर्धा मिटती नहीं।

विश्व की जटिल परिस्थितियों, मानसिक और शारीरिक वेदनाओं को पाते हुए भी क्या मनुष्य-समाज नहीं चेतेगा ? जीवन की नश्वरता और सुख-सुविधाओं की अस्थिरता को समझते हुए भी क्या वह नहीं सोचेगा ?

जीवन की दिशा बदलने के लिए हम सबका एक घोष होना चाहिए—"संयमः खलु जीवनम्।" अणुव्रत-आन्दोलन का यही घोष है। जीवन के क्षणों में शान्ति आये, उसके लिए वह नितान्त आवश्यक है।

—आचार्य तुलसी

आदि-वचन

पवित्रता की पहली मंजिल

मनुष्य बुद्धि-कुशल प्राणी है। उसकी क्रिया पहले बौद्धिक होती है, फिर दैहिक। इसलिए उसकी सारी क्रियाएं बुद्धि की उपज होती हैं, फिर चाहे समस्याएं हों या समाधान। समस्याएं स्व-वशता में निर्मित होती हैं, समाधान उनसे उकता कर ढूंढ़ना पड़ता है—वह परवशता है। जीभ पर नियन्त्रण न हो, तो अधिक खाने में आ जाता है। इससे और समस्या खड़ी होती है। आदमी रोगी बन जाता है। रोग कष्ट देता है, तो उसके समाधान की बात सूझती है। दवा ली जाती है, रोग चला जाता है। फिर वही क्रम। पेट के लिए नहीं, किन्तु जीभ के लिए खाता है। फिर समस्या खड़ी होती है, समाधान चाहता है। समाधान इसलिए नहीं कि जीभ पर नियन्त्रण रहे, किन्तु इसलिए कि जीभ को स्वाद भी मिलता रहे और रोगी होने से बचा जाय। यह है आदत की लाचारी और औषधि के साथ खिलवाड़।

धर्म तो सहज होता है। वह मनुष्य की बुद्धि की उपज नहीं है। बुद्धि की उपज है, उसका उपयोग। उपयोग में वंचना चलती है। बुराई करने पर मानसिक असन्तोष बढ़ता है और समाधान के लिए धर्म की शरण ली जाती है, परमात्मा की प्रार्थना की जाती है और इससे कुछ शान्ति मिलती है। फिर बुराई की ओर पाँव बढ़ते हैं, फिर अशान्ति

श्रौर धर्म की शरण ! धर्म की यह शरण पवित्र श्रौर शुद्ध बनने के लिए नहीं ली जाती, किन्तु बुराई का फल—यहाँ या अगले जन्म में कभी श्रौर कहीं न मिले, इसलिए ली जाती है। तात्पर्य यह है कि बुरा बने रहने के लिए आदमी धर्म का कवच धारण करता है। यही है धर्म के साथ खिल-वाड़ या आत्म-वंचना।

व्रत-ग्रहण से आत्म-संयमन सधता है। उसकी मर्यादा यह है कि बुराई को सुरक्षित रखने के लिए धर्म की शरण न लो, किन्तु उससे बचने के लिए लो। धर्म पवित्र आत्मा में ठहरता है (धम्मो सुद्धस्स चिठ्ठइ) अणुव्रत-आन्दोलन का उद्देश्य है—जीवन पवित्र बने। दैनिक व्यवहार में सचाई और प्रामाणिकता आये। धर्म की भूमिका विकसित हो।

धर्म का नवनीत

जैन, बौद्ध, वैदिक, इस्लाम, ईसाई आदि अनेक धर्म-सम्प्रदाय हैं। ये धर्म नहीं हैं, धर्म को समझने की विचार-धाराएं हैं। धर्म के पीछे जैन या बौद्ध नाम की मुद्रा नहीं है। वह सबके लिए समान है। धर्म को समझाने वाले तीर्थंकरों, आचार्यों और उपदेशकों के पीछे सम्प्रदाय या मत चलते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की विशुद्धि का नाम ही धर्म है। यह विशुद्धि साधना और तपस्या से प्राप्त होती है। अहिंसा धर्म है। उसे समझने की पद्धति भिन्न-भिन्न हो सकती है। उसकी वास्तविकता भिन्न नहीं हो सकती। मन्थन की प्रक्रिया भिन्न होने पर भी नवनीत में कोई अन्तर नहीं होता—मात्रा थोड़ी-बहुत भले हो। अहिंसा सब धर्म-मतों का

नवनीत है। सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इसी के रूपान्तर हैं। आहार संयम, सादगी आदि अहिंसा के ही चिन्ह हैं। अणुव्रत-आन्दोलन सर्वसाधारण के लिए सर्व-सम्मत नवनीत प्रस्तुत करता है, इसलिए कि मौलिक धर्म का आचरण बढ़े और धर्म के नाम पर चलने वाले साम्प्रदायिक आग्रह मिट जायें।

समन्वय और सहिष्णुता की दिशा

'दूसरों का अनिष्ट नहीं करूँगा', इसमें दूसरों का इष्ट स्वयं सध जाता है। 'दूसरों का इष्ट करूँगा' इसकी मर्यादाएँ बड़ी जटिल और विवादास्पद हैं। कोई बड़े जीव-जन्तुओं के इष्ट-साधन के लिए छोटे जीव-जन्तुओं के अनिष्ट को क्षम्य मानता है, कोई मनुष्य के इष्ट-साधन के लिए छोटे-बड़े सभी जीव-जन्तुओं के अनिष्ट को क्षम्य मानता है। कोई बड़े मनुष्यों के लिए छोटे मनुष्यों के अनिष्ट को क्षम्य मानता है। कोई किसी के लिए भी किसी के अनिष्ट को क्षम्य नहीं मानता। इस प्रकार अनेक मतवाद हैं। इन मतवादों को मिटाना कठिन है। इनको लेकर लड़ना अधर्म है, हिंसा है। इस परिस्थिति में सही मार्ग यही है कि मौलिक तत्त्वों का समन्वय किया जाय, सामुदायिक रूप में आचरण किया जाय और विचार भेदों के स्थलों में सहिष्णुता बरती जाय। अणुव्रत-आन्दोलन की एक प्रतिज्ञा है—'मैं सब धर्मों के प्रति तितिक्षा के भाव रखूंगा।'

विधि-निषेध

नियमों की रचना 'नहीं' के रूप में अधिक है, 'हां' में कम। विधा-

यक क्रिया की मर्यादा नहीं हो सकती। वह देश, काल, परिस्थिति और व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर है। वह कहां, कब, क्या, कितना करे— इसकी मर्यादा सर्वसाधारण रूप से नहीं हो सकती। निषेध की मर्यादा हो सकती है। व्यक्ति को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है, किन्तु दूसरों की स्वतन्त्रता में वह बाधक न बने तब। सब लोग अपने आप पर नियन्त्रण नहीं करते, इसीलिए सामूहिक नियमों से जनता पर नियन्त्रण किया जाता है। आखिर नियमन का रूप अधिकांशतया निषेधात्मक होगा। जो स्वयं अपने पर अंकुश रख सकता है, उसे बाहरी नियमन की अपेक्षा नहीं रहती। फिर तो निरोधक शक्ति बढ़ती है, आत्म-संयम बढ़ता है कर्तव्य में पवित्रता अपने आप आ जाती है। अणुव्रत-आन्दोलन की मुख्य अपेक्षा यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अनाचार से अपना बचाव करने की क्षमता उत्पन्न हो। फिर अनाचार तो उनकी अपनी मान्यता व विश्वास पर निर्भर होगा। चरित्र की न्यूनतम मर्यादाएँ जैसे सबके लिए समान रूप से स्वीकार्य हो सकती हैं, वैसे आचार या कर्तव्य की पद्धति नहीं हो सकती। उसके पीछे भिन्न-भिन्न धर्म-सम्प्रदाय के दृष्टिकोण जुड़ जाते हैं।

असाम्प्रदायिक आन्दोलन

अणुव्रत-आदोलन किसी का नहीं और सबका है, किसी एक सम्प्रदाय के लिए नहीं; सबके लिए है। इसका स्वरूप चारित्रिक है, इसलिए इसमें अधिकार और पद की व्यवस्था नहीं है। अधिकार की मर्यादा है, आत्मानुशासन और आत्म-निरीक्षण; और पद है, 'अणुव्रती'—जो व्रत ग्रहण करने से ही प्राप्त होता है।

चरित्र का आन्दोलन

यह आन्दोलन चरित्र का आन्दोलन है। आज विश्व को चरित्र की बहुत बड़ी आवश्यकता है। उसने सबसे अधिक किसी वस्तु को खोया है तो चरित्र को। विश्व की दुःखद अवस्था का प्रधान कारण चरित्र-हीनता ही है। जीवन की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं, तो जीवन जटिल बनता है। इसलिए अर्थनीति के सुधार की आवश्यकता महसूस होती है। वह कोई शाश्वत नहीं होती, बदल सकती है और बदलती भी है। कई राष्ट्रों में वह बदल चुकी है फिर भी वे अभय और अनातंकित नहीं हैं। जीवन-निर्वाह और विलास के साधन सुलभ होने पर भी वे शान्त नहीं हैं। इससे जान पड़ता है—शान्ति का मार्ग कुछ और है। वह यही है—चरित्र का विकास हो। बाहर की सब सुविधाएं हैं, पर अन्दर सन्तोष नहीं, तो शान्ति कहां ? बाहर की सुविधाएँ नहीं और अन्दर सन्तोष नहीं तो फिर अशान्ति का कहना ही क्या ? बाहरी सुविधाएँ हों और अन्दर सन्तोष हो—ऐसी शान्ति की स्थिति में भी कोई विशेष बात नहीं। किन्तु बाहरी असुविधाओं के होते हुए भी अगर आन्तरिक सन्तोष हो, तो भी शान्ति प्राप्त की जा सकती है—व्रतों के ग्रहण से। यही व्रत का मर्म है।

सर्व-साधारण भूमिका

जीवन की न्यूनतम मर्यादा सबके लिए समान रूप से ग्राह्य होती है—फिर चाहे वे आत्मवादी हों या अनात्मवादी; धर्म की कठोर साधना में रस लेने वाले हों या न हों। अनात्मवादी पूर्ण अहिंसा में

विश्वास भले ही न करें, किन्तु हिंसा अच्छी है—ऐसा तो वे नहीं कहते। राजनीति या कूटनीति को अनिवार्य मानने वाले भी यह नहीं चाहते कि उनकी पत्नियाँ उनसे छलनापूर्ण व्यवहार करें। असत्य और अप्रामाणिक भी दूसरों से सचाई और प्रामाणिकता की आशा रखा करते हैं। बुराई सचमुच मनुष्य की दुर्बलता है, स्थिति नहीं। सर्वमान्य स्थिति भलाई है, जिसकी साधना व्रत है। अणुव्रत-आन्दोलन उसीकी भूमिका है।

अणुव्रत

अणुव्रत अर्थात् छोटे व्रत। व्रत छोटा या बड़ा नहीं होता, किन्तु उसका अखण्ड ग्रहण न हो, तब वह अणु या अपूर्ण होता है। 'अणुव्रत' जैन आचार का विशिष्ट शब्द है। पतंजलि भी देश-काल की सीमा से मर्यादित अहिंसा आदि को व्रत और देश-काल की मर्यादा से मुक्त अहिंसा आदि को महाव्रत बताते हैं।

व्रत-ग्रहण का उद्देश्य

व्रतों के पीछे आत्म-शुद्धि की भावना है। ऐहिक लाभ या व्यवस्था के लिए व्रतों का ग्रहण नहीं होना चाहिए। उनके ग्रहण से ऐहिक लाभ स्वयं सधता है। व्रतों के ग्रहण का उद्देश्य तो आत्म-शोधन ही होना चाहिए। समाज की व्यवस्था ही अगर साध्य हो, तो वह राजकीय सत्ता से व्रतों की अपेक्षा अधिक सरलता पूर्वक हो सकती है। किन्तु व्रतों की भावना इससे बहुत आगे है। वह परमार्थ-मूलक है। उससे स्वार्थ और परमार्थ स्वयं फलित होते हैं।

प्रारम्भ से अब तक

इस कार्यक्रम का प्रारम्भ छोटे रूप में हुआ था। यह इतना व्यापक रूप लेगा, इसकी कल्पना भी न थी। जनता ने आवश्यक समझा—जैन-जैनेतर सभी ने इसे अपनाया—यह प्रसन्नता की बात है। मेरी भावना साकार बनी। उसमें मेरे शिष्यों—साधु और श्रावकों का वांछित सहयोग रहा। उन्होंने नियम तथा अन्य आवश्यक विषय भी सुझाये। आलोचकों से मैंने लाभ उठाया। ग्राह्य अंश लिया और उपेक्षणीय की उपेक्षा की। उचित सुझावों को स्वीकार करने के लिए आज भी मैं तैयार हूँ।

व्रत-परम्परा भारतीय मानस की अति प्राचीन परम्परा है। मैंने इसका कोई नया आविष्कार नहीं किया है। मैंने सिर्फ उस प्राचीन परम्परा को जीवन-व्यापी बनाने की प्रेरणा मात्र दी है। यह मेरा सहज धर्म है। मुझे आशा है, लोग जीवन-शुद्धि के व्रतों को प्राथमिकता देंगे। जटिल स्थितियों के बावजूद इन्हें अपनायेंगे। असल में जटिल तथा विकट परिस्थितियों में ही व्रतों के संकल्प की कसौटी होती है। कसौटी के मौकों को आमन्त्रित करना ही व्रतों की सफलता की ओर पग बढ़ाना है।

—आचार्य तुलसी

उद्गम और विकास

हिमालयों की हिम-शिलाओं से चलने वाला छोटा-सा निर्झर आर्यावर्त के विस्तृत भू-भाग का सिंचन कर सागर के निस्सीम आयतन में एक समता का संसार बसा लेगा, यह पहले कौन सोचता है। कोई सोचे या न सोचे, प्रकृति का नियम तो यह है ही। किसने कल्पना की थी कि मानसरोवर झील का यह नगण्य प्रपात गंगा बनकर अनेकों तीर्थ खड़े कर देगा तथा कोटि-कोटि लोगों की क्षुत् और तृषा का निवारक बन जायेगा।

अणुव्रत-आन्दोलन का भी कुछ ऐसा ही इतिहास है। एक छोटा-सा स्पन्दन सचमुच ही आन्दोलन बन गया। भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ ही था। पराधीनता से दबी और द्वितीय विश्व-युद्ध से संत्रस्त भारतीय चेतना पर अनैतिकता का दबाव बढ़ ही रहा था। उन दिनों अणुव्रत-आन्दोलन प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी छापर (राजस्थान) कस्बे में वर्षाकालीन प्रवास कर रहे थे। एक दिन अनौपचारिक विचार-चर्चा में उपस्थित लोगों ने कहा—यह असंभव है कि नैतिकता का पालन करते हुए आज की परिस्थितियों में कोई सामाजिक जीवन जी सके। आस्था के इस अधःपतन को देखकर आचार्यवर का आर्ष-हृदय सहसा सिहर उठा। उन्हें लगा, आस्थाओं का पतन नैतिक पतन से भी अधिक भयावह है, इसे संभालना चाहिए। यह ऋषियों व महर्षियों का देश कहीं आध्यात्मिक आस्थाओं से शून्य अनार्य न बन जाए।

अगले ही दिन प्रवचन म आह्वान किया, मुझे लाख नहीं, सहस्र नहीं, केवल पच्चीस व्यक्ति चाहिए जो अनैतिकता के प्रवाह को मोड़ने में आगे बढ़कर अपने चरण थाम सकें। देश के नाम पर, जाति के नाम पर मर मिटने के लिए सहस्रों लोग आगे आते हैं; क्या आध्यात्मिक व चारित्रिक आस्थाओं के इस दुःसह प्रपात पर खड़े होने के लिए मुझे २५ व्यक्ति भी नहीं मिलेंगे ? मुझे ऐसे सुभट चाहिएं जो प्रण करें कि जो भी नैतिक आचार-संहिता आप देंगे, बिना ननुनच हम उस पर आगे बढ़ेंगे। वातावरण स्फूर्तिमान था। एक-एक कर २५ व्यक्तियों ने अपने नाम दिए। भिक्षुक की झोली भर गई। भिक्षुक सन्तुष्ट हुआ। यही एक घटना थी, जिसे आज हम अणुव्रत-आन्दोलन का शिलान्यास कह सकते हैं।

आचार-संहिता

चरित्र-निर्माण की रूपरेखा का कार्य प्रारम्भ हुआ। आदर्श और व्यक्ति सर्वथा अलग-थलग पड़ गए, उन्हें कैसे जोड़ा जाए, यह एक समस्या थी। आदर्शों की ऊंचाई और व्यक्ति के स्तर में कोई तालमेल नहीं बैठ रहा था। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आदि आदर्शों के शिखर पर छलांग भरने के लिए सबको कहा जाए तो वे अनहोनी मानकर उसके मूल से भी दूर हट जाएंगे। व्यक्ति और आदर्श को विश्लिष्ट ही रहने देने में सर्वनाश की सूचना थी तो व्यक्ति को एकाएक आदर्शों के शिखर पर पहुँचा देने की कल्पना में असंभवता। इस स्थिति में क्रमिक आरोहण का सोपान ही व्यवहार्य और अपेक्षित माना गया और वह सोपान अणुव्रत-आन्दोलन की प्रस्तुत आचार-संहिता के रूप में सामने आया।

शुभारंभ

काँटों के बीच गुलाब के उद्भव की तरह आलोचनाओं के बीच अणुव्रत-आन्दोलन का शुभारम्भ हुआ। आचार-संहिता जैसे-जैसे तैयार हो रही थी, औपचारिक अनौपचारिक रूप से सर्वसाधारण के सामने आ रही थी। विविध प्रतिक्रियाएँ होनी ही थी। सब वस्तुओं का देशव्यापी कन्ट्रोल चल रहा था; अतः चोरबाजारी अपनी चरम सीमा पर थी। उससे बच पाना नितान्त असम्भव माना जाता था। मिलावट, रिश्वत आदि की भी यही स्थिति थी। लोग उपहास करते थे, कौन अपनाएगा ये नियम ? नियमों को अपनाने वाले या तो आत्म-वंचना करेंगे या भूखों मरेंगे। इन २५ लोगों की भावुकता में देखें और कौन सम्मिलित होता है। आचार-संहिता में कुछ नियम ऐसे भी थे जो जन्म, विवाह और मृत्यु से सम्बन्धित सामाजिक आडम्बरों, रूढ़ियों और कुप्रथाओं का विरोध करते थे। रूढ़िग्रस्त लोगों के लिए उन्हें सुन लेना भी आक्रोश का कारण बनता था। घरों, बाजारों व हमारे चारों ओर प्रतिक्रियाओं का एक अभेद्य-सा ताना-बाना बन चला था। लगता था, नैतिकता की खिलती हुई कलियों पर झंझावात मँडरा गया है।

आचार्यवर अपने संकल्प पर अडिग थे। देखते-देखते शुभारम्भ का निर्धारित दिन आ गया। सरदारशहर का प्रवास था, जहाँ सहस्र से भी अधिक जैन (तेरापन्थी) परिवार रहते हैं। गधइयों का 'नोहरा' था, जहाँ दस सहस्र से भी अधिक लोग एक परिषद् में बैठ सकते हैं। मंगला-

चरण हुआ, व्रतों का वाचन हुआ। आचार्यवर के ओजस्वी आह्वान पर एक-एक कर ५१ व्यक्तियों ने अणुव्रत-आचार-संहिता पर चलने के लिए अपने आपको समर्पित किया। वे २५ व्यक्ति भी अपने आपको दुगुनों में पाकर और अधिक साहसी बने। इस प्रकार अणुव्रत-आन्दोलन का आरम्भ ही उसकी भावी सफलताओं का शुभ संकेत बना। यह ऐतिहासिक दिन वि० सं० २००५, फाल्गुन शुक्ला २ (१ मार्च १९४९) का था।

समुद्रों पार

मार्क्स का यह विचार निराधार ही नहीं है कि घर्षण के बिना, विरोधी समागम के बिना विकास या गुणात्मक परिवर्तन नहीं है। अणु-व्रत-आन्दोलन के विषय में भी बहुत दिनों तक यही क्रम चालू रहा। जनता में विचारों का घर्षण होता रहा और छन-छन कर लोग अणुव्रती बनते रहे। ५१ से आरम्भ होने वाला अनुष्ठान एक ही वर्ष में ६२१ तक पहुँच गया।

प्रथम वार्षिक अधिवेशन भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में हुआ। सार्वजनिक समारोह में ६२१ व्यक्तियों ने चोरबाजारी न करना, मिला-वट न करना, आदि समग्र अणुव्रत प्रतिज्ञाएँ खड़े होकर विधिवत आचार्य-वर से ग्रहण कीं। राजधानी के साहित्यकारों, पत्रकारों, राजनयिकों तथा नागरिकों ने इसे राजधानी के इतिहास में अपूर्व अवसर माना। आज भले ही वह बात हमें इतनी बड़ी नहीं लगती हो, पर चोरबाजारी के भयंकर वातावरण में अवश्य एक अनोखी बात थी। अगले दिन दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में छपा, "कलियुग में सत्युग का उदय" अमावस के अंधेरे

में प्रकाश की एक किरण—६०० लखपति करोड़पतियों द्वारा चोर-बाजारी न करने की प्रतिज्ञा आदि-आदि। यह चर्चा केवल देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ही नहीं; समुद्रों पार ब्रिटेन, अमेरिका तक के पत्र-पत्रिकाओं में भी हुई। लोगों को लगा, अणुव्रत-आन्दोलन एक ही छलांग में सात समुद्रों पार पहुँच गया।

अब वातावरण में सघनता आई। जनता में आन्दोलन के प्रति उत्साह जगा। अणुव्रती बनने का अभियान बल पकड़ गया। दूसरे अधिवेशन पर ११००, तीसरे पर १५००, इस प्रकार बढ़ते हुए अणुव्रती सहस्रों में पहुँच गए।

साहस का परिचय

जो लोग अणुव्रती बने, सचमुच ही उन्होंने समाज के सामने साहस का परिचय दिया। बहुत सारे अणुव्रतियों ने सहस्रों व लाखों के साक्षात् मिलने वाले लाभ को ठुकरा दिया। बहुतों की आय मिलावट, झूठा तोल-माप आदि न करने से सीमित हो गई। चोरबाजारी व मिलावट आदि न करने के नाम पर बहुतों को अपनी नौकरियों से हाथ धो लेना पड़ा। सामाजिक रूढ़ियों का पालन न करने से बहुतों को पारिवारिक और सामाजिक संक्लेश में पढ़ना पड़ा। कुछ एक को अपने नैतिक आग्रह के कारण विधानमण्डलों व नगरपालिकाओं के चुनावों में भी हार खा लेनी पड़ी। सब कुछ सहकर भी उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया, बाधाओं में उन्हें आनंद मिलने लगा। यह एक प्रतिस्पर्धा-सी बन गई कि किसने कठिनाइयों का अधिक मुकाबला किया है और किसने नैतिकता का।

समाज में अधिक-से-अधिक अणुव्रती बनें और इसी प्रकार समाज के सम्मुख आदर्श उदाहरण रखते रहें, यह अणुव्रत-आन्दोलन का आज भी एक प्रमुख ध्येय है। ऐसे थोड़े ही लोग क्यों न हों, पर वे समाज की दिशा को मोड़ते हैं।

पद-यात्राएँ और जन-सम्पर्क

आचार्यश्री तुलसी जैन तेरापंथ परम्परा के नवम अधिनायक हैं। उनके नेतृत्व में ६५० के लगभग साधु-साध्वियों तथा लाखों अनुयायी हैं। आचार्य तुलसी का आदेश ही उन सबके लिए सर्वोपरि आदेश है। पाद-विहार जैन साधु-चर्या का अभिन्न अंग है। अणुव्रत-आन्दोलन के शुभारम्भ के साथ ही पाद-विहार में विशेष सक्रियता आई। आचार्यवर ने स्वयं तब से अब तक १५ वर्षों में लगभग २० हजार मील की पद-यात्राएँ देश के सुदूर भागों में की। साधु-जन भी अणुव्रतों का संदेश लेकर उत्तर से दक्षिणी अंचल तक व पश्चिम से पूर्वी अंचल तक सारे देश में फैले। जन-सम्पर्क का इतना बड़ा अभियान इतिहास का एक अनूठा चरण बनता है। प्रारम्भ में लोगों को लगा कि यह अभियान सम्प्रदाय विशेष का प्रचार मात्र ही न हो, पर धीरे-धीरे अणुव्रत-आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक रूप मिला। जाति, धर्म, प्रान्त, भाषा आदि के भेद-भाव बिना सभी लोगों ने इसे अपनाया।

विभिन्न धाराओं में

अणुव्रत-आन्दोलन का ध्येय एक था—नैतिक मूल्यों का पुनरुज्जीवन।

कार्य-पद्धति में देश-काल के अनुसार नव-नव उन्मेष होते रहे। कहना चाहिए, हिमालय की उपत्यकाओं से आने वाला निर्झर क्षेत्रीय अपेक्षाओं के अनुसार अनेक धाराओं में बहने लगा। अभियान को चरितार्थ करने में वैयक्तिक चेतना ही पर्याप्त न थी, इसलिए वर्गीय कार्यक्रमों का आविर्भाव हुआ और वर्गीय नियमों का निर्माण हुआ। इस आधार पर व्यापारियों, विद्यार्थियों, राजकर्मचारियों, महिलाओं आदि में व्यापक सुधार हुआ। सहस्रों-सहस्रों लोगों ने अपनी-अपनी वर्गगत बुराइयों का परित्याग कर देश के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। सन् १६५७ के आम चुनाव के अवसर पर चुनाव-सम्बन्धी आचार-संहिता का निर्माण हुआ। लगभग सभी राजनैतिक दलों के शीर्षस्थ लोगों ने उस संहिता के निर्धारण में भाग लिया और अपने-अपने दलों में उसे क्रियान्वित करने का आश्वासन दिया।

अणुव्रत-विचार-परिषदों का देशव्यापी कार्यक्रम चला। विश्रुत विचारकों व जन-नेताओं ने अणुव्रत के मंच से सात्त्विक मूल्यों को आगे बढ़ाया।

चरित्र-निर्माण-सम्बन्धी सप्ताह और पखवाड़ों की भी बाढ़-सी आई। नैतिकता के पक्ष में वातावरण आन्दोलित हुआ।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा-दिवस व मैत्री-दिवस आदि मनाने की भी परम्पराएँ बनी हैं।

जन्म, विवाह और मृत्यु-सम्बन्धी सामाजिक रूढ़ियों के अपनयन के लिए 'नई मोड़' का प्रवर्तन हुआ। पर्दा-प्रथा के बहिष्कार का अभियान भी इसका अंग बना। अणुव्रतों के आचरण में जो सामाजिक कठिनाइयां

अणुव्रतियों के सामने रहती थीं, वे इस कार्यक्रम से बहुत कुछ दूर हुईं। समाज के निर्जीव ढर्रों में व्यापक परिवर्तन आया।

जीवन को साधनाशील बनाने की दृष्टि से 'उपासक-संघ' का आविर्भाव हुआ। उसमें शिविर-साधना के आधार से खान-पान, रहन-सहन आदि के यथोचित परिवर्तन का अभ्यास कराया जाता है। ध्यान, तत्त्वज्ञान आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। अणुव्रत आदर्शों को जीवन में उतारने की सचमुच ही यह एक प्रयोगशाला है।

रूस और अमेरिका के अधिनायक, ख्रुश्चेव और आइजनहावर के ऐतिहासिक मिलन के अवसर पर एक पंचसूत्री अन्तर्राष्ट्रीय आचार-संहिता का निर्माण हुआ। आचार्यवर का संदेश व आचार-संहिता सभी प्रमुख देशों में प्रसारित की गई। उस आचार-संहिता को और अधिक व्यापक बनाने तथा उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने का महान् कार्य अणुव्रत-आन्दोलन के सामने है।

इसी वर्ष से राष्ट्रीय-अणुव्रतों का अभियानात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ है, जो देश की वर्तमान परिस्थितियों में बहुत उपयोगी है।

सहयोगी स्रोत

अणुव्रत-आन्दोलन को सभी स्तरों पर पूरा-पूरा सहयोग मिला है। जनता का तो स्वयं का वह अपना आन्दोलन था ही। सर्व प्रथम इसे पत्रकारों ने पकड़ा। चलने वाली बहुमुखी प्रवृत्तियों को सबके सामने रखना उन्होंने अपना काम समझा। संवादों के अतिरिक्त लेखों, लेख-मालाओं व विशेषांकों का प्रकाशन भी यथेष्ठ रूप में उन्होंने किया और

आज भी करते जा रहे हैं।

जनता की तरह जन-नायकों ने भी आन्दोलन में अप्रत्याशित रस लिया। प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद और प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने तो आन्दोलन के लिए सब कुछ किया जो उनसे अपेक्षित था। केन्द्रिय मंत्रि-मण्डल के मंत्रियों, विभिन्न प्रांतों के राज्यपालों व मंत्रियों ने भी अपने-अपने क्षेत्र में अणुव्रतों को बल देना अपना-अपना कर्त्तव्य माना। आन्दो-लन की यह उल्लेखनीय विशेषता रही कि विभिन्न राजनैतिक दलों का सहयोग व समर्थन भी समान रूप से मिला।

सब क्षेत्रों में अणुव्रतों के लिए द्वार खुले। प्रशासन ने राजकीय विभागों के द्वार खोले, विश्वविद्यालयों ने कॉलेजों के द्वार खोले, पंडितों ने मन्दिरों के द्वार खोले, मौलवी लोगों ने मस्जिदों के द्वार खोले, जेल और पुलिस के दरवाजे भी अणुव्रतों के लिए खुले; सभी क्षेत्रों में डटकर काम हुआ और हो रहा है। इस प्रकार सब ओर के सहयोगी स्रोतों से अणुव्रतों का निर्झर समृद्ध बनता ही गया और बनता ही जा रहा है।

संगठन और साहित्य

अणुव्रत-आंदोलन की पृष्ठभूमि में ६५० जीवन-दानी व पाद-विहारी मुनिजनों का अनूठा बल तो है ही साथ-साथ प्रारम्भ से अब तक कार्य-कर्त्ताओं का विस्तार भी होता रहा है। अनेकानेक लोगों ने हर दिशा में अपने-आपको अर्पित किया है। अपने-अपने क्षेत्रों में प्रभावशाली कार्य करके दिखाया है। केन्द्रीय अणुव्रत समिति आदि से काम कर रही है। स्थानीय अणुव्रत समितियों का भी देश में जाल बिछता जा रहा है।

अणुव्रत-विद्यार्थी-परिषदों का, अ० भा० महिला मण्डलों का संगठन व्यापक रूप से हुआ है। अन्यान्य वर्गों में भी वर्गीय संगठन बने और अपने-अपने वर्ग में नैतिक चेतना बनाये रखे, यह संगठन की भावी दिशा है।

साहित्य की दिशा में चिन्तन प्रधान, परिचय मूलक, प्रेरणामूलक साहित्य प्रचुर मात्रा में विभिन्न संस्थाओं से प्रकाशित हुआ है। अणुव्रत नाम से एक पाक्षिक-पत्र भी बहुत समय से प्रकाशित किया जा रहा है।

भावी दिशा-अणुव्रत-विहार

अव्रणुत-आन्दोलन का १५ वर्षों का इतिहास बहुत ही प्रेरक और घटनात्मक है। पर्याप्त विस्तार से लिखा जाकर तो वह अनेक खण्डों की सामग्री बनता है। कुछ ही पृष्ठों में उसे समाहित कर लेना तो उसका दिग्दर्शन मात्र है। अतीत की तरह उसकी भावी की दिशाएं भी बहुत विस्तृत हैं। इन्हीं दिशाओं का एक अंग अणुव्रत-विहार योजना है, जो अभी-अभी ही क्रियावित होने की ओर है। अणुव्रत-विहार योजना अणुव्रत-आन्दोलन के रचनात्मक पक्ष का विकास चाहती है। अणुव्रत-विहार योजना जीवन के नैतिक मूल्यों का राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्थापना चाहती है। आशा है यथोचित संरक्षण और संवर्धन पाकर वह योजना अणुव्रत-आन्दोलन को निरुपम व्यापकता और अपरिमित गहराई में ल जाएगी।

२ सितम्बर १९६४ —मुनि नगराज

बीकानेर (राजस्थान)

लक्ष्य और साधन

१—अणुव्रत-आन्दोलन का लक्ष्य है :—

(क) जाति, वर्ण, देश और धर्म का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्म-संयम की ओर प्रेरित करना।

(ख) अहिंसा और विश्व-शान्ति की भावना का प्रसार करना।

२—इस लक्ष्य की पूर्ति के साधन-स्वरूप मनुष्य को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का व्रती बनाना।

३—अणुव्रतों को ग्रहण करने वाला "अणुव्रती" कहलायेगा।

४—जीवन-शुद्धि में विश्वास रखने वाले किसी भी धर्म, दल, जाति, वर्ण और राष्ट्र के स्त्री-पुरुष "अणुव्रती" हो सकेंगे।

५—अणुव्रती तीन श्रेणियों में विभक्त होंगे—

(क) अणुव्रतों, शील और चर्या तथा आत्म-उपासना के व्रतों को स्वीकार करनेवाला "अणुव्रती"।

(ख) इनके साथ-साथ परिशिष्ट संख्या १ के बतलाये गये विशेष व्रतों को स्वीकार करने वाला 'विशिष्ट अणुव्रती'।

(ग) परिशिष्ट संख्या २ व ३ में बतलाये गये ग्यारह व्रतों या वर्गीय नियमों को स्वीकार करने वाला "प्रवेशक अणुव्रती" कहलायेगा।

६—व्रत-भंग होने पर अणुव्रती को प्रायश्चित्त करना आवश्यक होगा।

७—व्रत-पालन की दिशा में अणुव्रतियों का मार्ग-दर्शन प्रवर्तक करेंगे।

: १ :

अहिंसा अणुव्रत

"अहिंसा सव्वभूयखेमंकरी" (जैन)

(अहिंसा सब जीवों के लिए कल्याणकारी है)

"अहिंसा सव्वपाणानं अरियो ति पवुच्चति" (बौद्ध)

(अहिंसा सब जीवों का आर्य—परम तत्त्व है)

"मा हिंस्यात् सर्व भूतानि" (वैदिक)

(किसी भी जीव की हिंसा मत करो)

अहिंसा में मेरी श्रद्धा है। हिंसा को मैं त्याज्य मानता हूं। अहिंसा के क्रमिक विकास के लिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूं :—

१—चलने-फिरने वाले निरपराध प्राणी की संकल्पपूर्वक घात नहीं करूंगा।

२—आत्म-हत्या नहीं करूंगा।

३—हत्या व तोड़-फोड़ का उद्देश्य रखने वाले दल या संस्था का सदस्य नहीं बनूंगा और न ऐसे कार्यों में भाग लूंगा।

४—जातीयता के कारण किसी को अस्पृश्य या घृणित नहीं मानूंगा।

५—सब धर्मों के प्रति तितिक्षा के भाव रखूंगा—भ्रान्ति नहीं फैलाऊंगा व मिथ्या-आरोप नहीं लगाऊंगा।

६—किसी के साथ क्रूर-व्यवहार नहीं करूंगा—

(क) किसी कर्मचारी, नौकर या मजदूर से अति श्रम नहीं लूंगा।

(ख) अपने आश्रित प्राणी के खान-पान व आजीविका का कलुष-भाव से विच्छेद नहीं करूंगा।

(ग) पशुओं पर अति भार नहीं लादूंगा।

: २ :

सत्य अणुव्रत

"सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः" (वैदिक)
(सत्य सम्पूर्णतः मेरी रक्षा करे)

"यम्हि सच्चं च धम्मो च सो सुची" (बौद्ध)
(जिसमें धर्म और सत्य है, वह पवित्र है)

"सच्चं लोगम्मि सारभूयं" (जैन)
(सत्य लोक में सारभूत है)

सत्य में मेरी श्रद्धा है। असत्य को मैं त्याज्य मानता हूं। सत्य के क्रमिक विकास के लिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूं :—

१—क्रय-विक्रय में माप-तौल, संख्या, प्रकार आदि के विषय में असत्य नहीं बोलूंगा।

२—जान-बूझकर असत्य निर्णय नहीं दूंगा।

३—असत्य मामला नहीं करूंगा और न असत्य साक्षी दूंगा।

४—सौंपी या धरी (बन्धक) वस्तु के लिए इन्कार नहीं करूंगा।

५—जालसाजी नहीं करूंगा—

(क) जाली हस्ताक्षर नहीं करूंगा।

(ख) झूठा खत या दस्तावेज नहीं लिखाऊंगा।

(ग) जाली सिक्का या नोट नहीं बनाऊंगा।

६—वंचनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा—

(क) मिथ्या प्रमाण-पत्र नहीं दूंगा।

(ख) मिथ्या विज्ञापन नहीं करूंगा।

(ग) अवैध तरीकों से परीक्षा में उत्तीर्ण होने की चेष्टा नहीं करूंगा।

(घ) अवैध तरीकों से विद्यार्थियों के परीक्षा में उत्तीर्ण होने में सहायक नहीं बनूंगा।

७—स्वार्थ, लोभ या द्वेषवश भ्रमोत्पादक और मिथ्या संवाद, लेख व टिप्पणी प्रकाशित नहीं करूंगा।

अचौर्य अणुव्रत

"लोके अदिन्नं नादियति तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं" (बौद्ध)
(जो अदत्त नहीं लेता, उसे ब्राह्मण कहता हूँ)

"लोभाविले आययइ अदत्तं" (जैन)
(चोरी वही करता है, जो लोभी है)

अचौर्य में मेरी श्रद्धा है। चोरी को मैं त्याज्य मानता हूँ। अचौर्य के क्रमिक-विकास के लिये मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूँ :—

१—दूसरों की वस्तु को चोर-वृत्ति से नहीं लूंगा।

२—जान-बूझकर चोरी की वस्तु को नहीं खरीदूंगा और न चोर को चोरी करने में सहायता दूंगा।

३—राज्य-निषिद्ध वस्तु का व्यापार व आयात-निर्यात नहीं करूँगा।

४—व्यापार में अप्रामाणिकता नहीं बरतूंगा—

(क) किसी चीज में मिलावट नहीं करूंगा। जैसे—दूध में पानी, घी में वेजीटेबल, आटे में सिंघराज, औषधि आदि में अन्य वस्तु का मिश्रण।

(ख) नकली को असली बताकर नहीं बेचूँगा। जैसे—कलचर मोती को खरे मोती बताना, अशुद्ध घी को शुद्ध घी बताना आदि।

(ग) एक प्रकार की वस्तु दिखाकर दूसरे प्रकार की वस्तु नहीं दूँगा।

(घ) सौदे के बीच में कुछ नहीं खाऊँगा।

(ङ) तौल-माप में कमी-बेसी नहीं करूँगा।

(च) अच्छे माल को बट्टा काटने की नीयत से खराब या दागी नहीं ठहराऊँगा।

(छ) व्यापारार्थ चोर-बाजार नहीं करूँगा।

५—किसी ट्रस्ट या संस्था का अधिकारी होकर उसकी धन-सम्पत्ति का अपहरण या अपव्यय नहीं करूँगा।

६—बिना टिकिट रेलादि से यात्रा नहीं करूँगा।

: ४ :

ब्रह्मचर्य अणुव्रत

"तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं" (जैन)

(ब्रह्मचर्य सब तपों में प्रधान है)

"मा ते कामगुणे रमस्सु चित्त" (बौद्ध)

(तेरा चित्त काम-भोग में रमण न करे)

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" (वैदिक)

(ब्रह्मचर्य-तप के द्वारा देवों ने मृत्यु को जीत लिया)

ब्रह्मचर्य में मेरी श्रद्धा है। अब्रह्मचर्य को मैं त्याज्य मानता हूँ। ब्रह्मचर्य के क्रमिक-विकास के लिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूँ :—

१—कुमार-अवस्था तक ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

२—४५ वर्ष की आयु के बाद विवाह नहीं करूँगा।

३—महीने में कम से-कम २० दिन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

४—किसी प्रकार का अप्राकृतिक मैथुन नहीं करूँगा।

५—वेश्या व पर-स्त्री-गमन नहीं करूँगा।

: ५ :

अपरिग्रह अणुव्रत

"मा गृधः कस्य स्विद्धनम्" (वैदिक)

(किसी के धन पर मत ललचाओ)

"इच्छाहु आगाससमा अणंतया" (जैन)

(इच्छा आकाश के समान अनन्त है)

"तण्हक्खयो सव्वं दुक्खं जिनाति" (बौद्ध)

(जिसके तृष्णा क्षीण हो जाती है, वह सब दुःखों को जीत लेता है)

अपरिग्रह में मेरी श्रद्धा है। परिग्रह को मैं त्याज्य मानता हूँ अपरिग्रह के क्रमिक-विकास के लिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूँ :—

१—अपने मर्यादित परिमाण (......) से अधिक परिग्रह नहीं रखूँगा।

२—घूँस नहीं लूँगा।

३—मत (वोट) के लिए रुपया न लूँगा और न दूँगा।

४—लोभवश रोगी की चिकित्सा में अनुचित समय नहीं लगाऊँगा।

५—सगाई-विवाह के प्रसंग में किसी प्रकार के लेने का ठहराव नहीं करूँगा।

६—दहेज आदि का प्रदर्शन नहीं करूँगा और न प्रदर्शन में भाग लूँगा।

शील और चर्या

अणुव्रती की जीवन-चर्या जीवन-शुद्धि की भावना के प्रतिकूल न हो, इसलिए मैं निम्न व्रतों को ग्रहण करता हूँ :—

१—आमिष भोजन नहीं करूँगा।

२—मद्यपान नहीं करूँगा।

३—भांग, गांजा, तम्बाकू, जर्दा आदि का खाने-पीने व सूंघने में व्यवहार नहीं करूँगा।

४—खाने-पीने की वस्तुओं की दैनिक मर्यादा करूँगा। किसी भी दिन ३१ वस्तुओं से अधिक नहीं खाऊँगा।

५—वर्तमान वस्त्रों के सिवाय रेशमी आदि कृमि-हिंसाजन्य वस्त्र न पहनूँगा और न ओढ़ूँगा।

६—विशेष परिस्थिति और विदेशवास के अतिरिक्त, वर्तमान वस्त्रों के सिवाय स्वदेश से बाहर बने वस्त्र न पहनूँगा और न ओढ़ूँगा।

७—असद्-आजीविका नहीं करूँगा—

(क) मद्य का व्यापार नहीं करूँगा।

(ख) जुआ और घुड़दौड़ नहीं खेलूँगा।

(ग) आमिष का व्यापार नहीं करूँगा।

८—मृतक के पीछे प्रथा रूप से नहीं रोऊँगा।

९—होली पर गन्दे पदार्थ नहीं डालूँगा और न अश्लील व भद्दा व्यवहार करूँगा।

आत्म-उपासना

१—प्रतिदिन आत्म-चिन्तन करूँगा ।[1]

२—प्रतिमास एक उपवास करूँगा । यदि यह सम्भव न हुआ तो दो एकाशन करूँगा ।

३—पक्ष में एक बार व्रतावलोकन और पाक्षिक भूलों व प्रगति का निरीक्षण करूँगा ।

४—किसी के साथ अनुचित या कटु व्यवहार हो जाने पर १५ दिन की अवधि में क्षमा-याचना कर लूँगा ।

५—प्रतिवर्ष एक अहिंसा दिवस मनाऊँगा । उस दिन—

(क) उपवास रखूँगा ।

(ख) ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा ।

(ग) असत्य व्यवहार नहीं करूँगा ।

(घ) कटु वचन नहीं बोलूँगा ।

(ङ) मनुष्य, पशु-पक्षी आदि पर प्रहार नहीं करूँगा ।

(च) मनुष्य व पशुओं पर सवारी नहीं करूँगा ।

(छ) वर्ष भर में हुई भूलों की आलोचना करूँगा ।

(ज) किसी के साथ हुए कटु व्यवहार के लिए क्षमत-क्षामणा करूँगा ।

---

१. देखें—परिशिष्ट सं० ४

परिशिष्ट—१

विशिष्ट अणुव्रती के व्रत

१—अपने लिए प्रतिवर्ष १०० गज से अधिक पहिनने ओढ़ने का कपड़ा नहीं खरीदूंगा अथवा हाथ के कते और बुने वस्त्र के सिवाय अन्य वस्त्र नहीं पहनूंगा।

२—घूंस नहीं दूंगा।

३—आय-कर, बिक्री-कर और मृत्यु-कर की चोरी नहीं करूंगा।

४—राज्य द्वारा निर्धारित दर से अधिक ब्याज नहीं लूंगा।

५—सट्टा नहीं करूंगा।

६—संग्रहीत पूंजी (सोना, चांदी, जवाहिरात, आभूषण और नकद रुपए) एक लाख से अधिक नहीं रखूंगा।

परिशिष्ट—२

प्रवेशक अणुव्रती के व्रत

१—चलने-फिरने वाले निरपराध प्राणी की संकल्पपूर्वक घात नहीं करूंगा।

२—सौंपी या धरी (बन्धक) वस्तु के लिए इन्कार नहीं करूंगा।

३—दूसरों की वस्तु को चोर-वृत्ति से नहीं लूंगा।

४—किसी भी चीज में मिलावट कर या नकली को असली बताकर नहीं बेचूंगा।

५—तौल-माप में कमी-बेसी नहीं करूंगा।

६—वेश्या व पर-स्त्री-गमन नहीं करूंगा।

७—जुआ नहीं खेलूंगा।

८—सगाई व विवाह के प्रसंग में किसी प्रकार के लेने का ठहराव नहीं करूंगा।

९—मत (वोट) के लिए रुपया न लूंगा और न दूंगा।

१०—मद्यपान नहीं करूंगा।

११—भांग, गांजा, तम्बाकू आदि का खाने, पीने व सूंघने में व्यवहार नहीं करूंगा।

परिशिष्ट—३

वर्गीय अणुव्रत नियम

विद्यार्थी के लिए :

१—मैं परीक्षा में अवैधानिक तरीकों से उत्तीर्ण होने का प्रयत्न नहीं करूंगा।

२—मैं तोड़-फोड़ मूलक हिंसात्मक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

३—मैं विवाह-प्रसंग में रुपये आदि लेने का ठहराव नहीं करूंगा।

४—मैं धूम्रपान व मद्यपान नहीं करूँगा।

५—मैं बिना टिकिट रेलादि से यात्रा नहीं करूँगा।

व्यापारी के लिए :

१—मैं किसी भी चीज में मिलावट नहीं करूंगा।

२—मैं नकली को असली बताकर नहीं बेचूंगा।

३—मैं एक प्रकार की वस्तु दिखाकर दूसरे प्रकार की वस्तु नहीं दूंगा।

४—मैं सौदे के बीच में कुछ नहीं खाऊँगा।

५—मैं तौल-माप में कमी-बेसी नहीं करूँगा।

६—मैं अच्छे माल को बट्टा काटने की नीयत से खराब या दागी नहीं ठहराऊँगा।

७—मैं व्यापारार्थ चोर-बाजार नहीं करूगा।

८—मैं राज्य-निषिद्ध वस्तु का व्यापार व आयात-निर्यात नहीं करूँगा।

राज्यकर्मचारी के लिए :

१—मैं रिश्वत नहीं लूँगा।

२—मैं अपने प्राप्त अधिकारों से किसी के साथ अन्याय नहीं करूँगा।

३—मैं जनता और सरकार को धोखा नहीं दूँगा।

महिला के लिए :

१—मैं दहेज का प्रदर्शन नहीं करूँगी।

२—मैं अपने लड़के-लड़की की शादी में रुपये आदि लेने का ठहराव नहीं करूँगी।

३—मैं आभूषण आदि के लिए पति को बाध्य नहीं करूँगी।

४—मैं सास-श्वसुर आदि के साथ कटु-व्यवहार हो जाने पर क्षमा-याचना करूँगी।

५—मैं अश्लील व भद्दे गीत नहीं गाऊँगी।

६—मैं मृतक के पीछे प्रथा रूप से नहीं रोऊँगी।

७—मैं बच्चों के लिए गाली व अभद्र शब्दों का प्रयोग नहीं करूँगी।

नोट:—प्रवेशक अणुव्रती बनने के लिए महिलाओं को कम-से-कम पाँच नियम अनिवार्यत: पालन करने होंगे।

राष्ट्रीय अणुव्रत

१—जाति, सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त आदि को लेकर किसी प्रकार के संघर्ष को प्रोत्साहन नहीं दूँगा।

२—राष्ट्रविघातक तथा तोड़-फोड़ मूलक हिंसात्सक प्रवृत्ति में भाग नहीं लूंगा।

३—रिश्वत न दूँगा न लूँगा।

४—मिलावट नहीं करूँगा।

५—दहेज आदि का ठहराव न करूँगा और न ही उसका प्रदर्शन करूँगा।

६—मादक पदार्थों का सेवन नहीं करूँगा।

चुनाव सम्बन्धी नियम

उम्मीदवार के लिए :

१—मैं रुपये-पैसे व अन्य अवैध प्रलोभन देकर मत ग्रहण नहीं करूँगा।

२—मैं किसी दल या उम्मीदवार के प्रति मिथ्या, अश्लील व भद्दा प्रचार नहीं करूँगा।

३—मैं धमकी व अन्य हिंसात्मक प्रभाव से किसी को मतदान के लिए प्रभावित नहीं करूँगा।

४—मैं मत-गणना में पर्चियाँ हेर-फेर करवाने का प्रयत्न नहीं करूँगा।

५—मैं प्रतिपक्षी उम्मीदवार और उसके मतदाताओं को प्रलोभन व भय आदि बताकर तथा शराब आदि पिलाकर तटस्थ करने का प्रयत्न नहीं करूँगा।

६—मैं दूसरे उम्मीदवार या दल से अर्थ प्राप्त करने के लिए उम्मीदवार नहीं बनूँगा।

७—मैं सेवा-भाव से रहित केवल व्यवसाय-बुद्धि से उम्मीदवार नहीं बनूँगा।

८—मैं अनुचित व अवैध उपायों से पार्टी-टिकिट लेने का प्रयत्न नहीं करूँगा।

९—मैं अपने अभिकर्ता (एजेन्ट), समर्थक और कार्यकर्ता को इन व्रतों की भावनाओं का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दूँगा।

चुनाव अधिकारी के लिए :

१—मैं अपने कर्तव्य-पालन में पक्षपात, प्रलोभन व अन्याय को प्रश्रय नहीं दूँगा।

सत्तारूढ़ उम्मीदवार के लिए :

१—मैं राजकीय साधनों तथा अधिकारों का अवैध उपयोग नहीं करूँगा।

मतदाताओं के लिए :

१—मैं रुपये-पैसे आदि लेकर या लेने का ठहराव कर मतदान नहीं करूँगा।

२—मैं किसी उम्मीदवार या दल को झूठा भरोसा नहीं दूंगा।

३—मैं जाली नाम से मतदान नहीं करूंगा।

समर्थक के लिए :

१—मैं अपने पक्ष या विपक्ष के किसी उम्मीदवार का असत्य प्रचार नहीं करूंगा।

२—मैं अनैतिक उपक्रमों से दूसरे की सभा को भंग करने का प्रयत्न नहीं करूंगा।

३—मैं उम्मीदवार-सम्बन्धी सारे नियमों का पालन करूंगा।

परिशिष्ट—४

आत्म-चिन्तन

१—किसी के साथ कोई मानसिक, वाचिक या कायिक दुर्व्यवहार तो नहीं किया ?

२—घर के या दूसरे व्यक्तियों से झगड़ा तो नहीं किया ?

३—झूठ बोलकर अपना दोष छिपाने की कोशिश तो नहीं की ?

४—स्वार्थ या बिना स्वार्थ किसी झूठी बात का प्रचार तो नहीं किया ?

५—धन पाने के लिए विश्वासघात तो नहीं किया ?

६—किसी की कोई वस्तु चुराई तो नहीं ?

७—कामभोग की तीव्र अभिलाषा तो नहीं रखी ?

८—स्वप्रशंसा और परनिन्दा से प्रसन्नता व स्वनिन्दा और परप्रशंसा से अप्रसन्नता तो नहीं हुई ?

९—क्रोध तो नहीं आया और आया तो क्यों, किस पर और कितनी बार ?

१०—अपने मुंह से अपनी बड़ाई तो नहीं की ?

११—किसी का झूठा पक्ष लेकर विवाद तो नहीं फैलाया और किसी को अपमानित करने की कोशिश तो नहीं की ?

१२—किसी की निन्दा तो नहीं की ?

१३—किसी के साथ अशिष्ट व्यवहार तो नहीं किया ?

१४—अविनय, भूल या अपराध हो जाने पर क्षमा-याचना की या नहीं ?

१५—जिह्वा की लोलुपतावश अधिक तो नहीं खाया-पीया ?

१६—ताश, चौपड़, कैरम आदि खेलों में समय बर्बाद तो नहीं किया ?

१७—किन्हीं अनैतिक या अवांछनीय कार्यों में भाग तो नहीं लिया ?

१८—किसी व्यक्ति, जाति, दल, पक्ष या धर्म के प्रति भ्रान्ति तो नहीं फैलाई ?

१९—व्रतों की भावना को भुलाया तो नहीं ?

२०—दिन-भर में कौन से अनुचित, अप्रिय एवं अवगुण पैदा करने वाले कार्य किये ?

शिक्षाएँ

व्रतों का पालन आन्तरिक भावना से होना चाहिए। अणुव्रती व्रतों के पालन में दृढ़ता रखे। यहाँ कुछ शिक्षाएं दी जाती हैं, जिन्हें व्रतों की शुद्धि के लिए निरन्तर ध्यान में रखना चाहिए :—

अणुव्रती—

१—आन्दोलन के प्रति निष्ठा व सद्‌भावना रखे।

२—व्रतों की भाषा तक सीमित न रहकर भावना से व्रतों का पालन करे।

३—तर्क दृष्टि से बचकर अवांछनीय कार्य न करे।

४—प्रत्येक कार्य करते हुए जागरूक रहे कि वह कोई अनुचित या निंद्य कार्य तो नहीं कर रहा है।

५—भूल को समझ लेने के बाद दुराग्रह न करे।

६—व्यक्तिगत स्वार्थ या द्वेषवश किसी का मर्म प्रगट न करे।

७—कोई अणुव्रती अन्य अणुव्रती को व्रत भंग करते देखे, तो या तो उसे वह सचेत करे या प्रवर्तक को निवेदन करे, पर दूसरों में प्रचार न करे।

८—उत्तरोत्तर व्रतों का विकास करे एवं दूसरों को व्रती बनने की प्रेरणा दे।

अणुव्रत प्रार्थना

(राग—उच्च हिमालय की चोटी से)

बड़े भाग्य हे भगिनी बन्धुओं, जीवन सफल बनाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएं हम ॥
अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा, सच्चे सुख के साधन हैं।
सुखी देख लो सन्त अकिंचन, संयम ही जिनका धन है ॥
उसी दिशा में, दृढ़ निष्ठा से, क्यों नहीं कदम बढ़ायें हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएँ हम ॥१॥
रहें यदि व्यापारी तो, प्रामाणिकता रख पाएंगे।
राज्य-कर्मचारी जो होंगे, रिश्वत कभी न खाएंगे।
दृढ़ आस्था, आदर्श नागरिकता के नियम निभाएं हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पायें हम ॥२॥
गृहणी हो, गृहपति हो चाहे, विद्यार्थी, अध्यापक हो।
वैद्य, वकील शील हो सब में नैतिक निष्ठा व्यापक हो ॥
धर्मशास्त्र के धार्मिकपन को, आचरणों में लाएँ हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएँ हम ॥३॥
अच्छा हो अपने नियमों से, हम अपना संकोच करें।
नहीं दूसरे वध बन्धन से, मानवता की शान हरें ॥
यह विवेक मानव का निज गुण, इसका गौरव गाएँ हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएँ हम ॥४॥
आत्म-शुद्धि के आन्दोलन में, तन-मन अर्पण कर देंगे।
कड़ी जाँच हो लिए व्रतों में आँच नहीं आने देंगे ॥
भौतिकवादी प्रलोभनों में, कभी न हृदय लुभाएँ हम ॥
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएँ हम ॥५॥
सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, उसका असर राष्ट्र पर हो।
जाग उठे जन-जन का मानस, ऐसी जागृति घर-घर हो ॥
'तुलसी' सत्य अहिंसा की, जय-विजय-ध्वजा फहराएँ हम।
आत्म-साधना के सत्पथ में, अणुव्रती बन पाएँ हम ॥६॥

(प्रवेश-पत्र)

श्रीयुत् मन्त्री,
अ० भा० अणुव्रत समिति,
४०९३, नया बाजार,
दिल्ली-६

प्रिय महाशय,

मैंने आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत-आन्दोलन के लक्ष्य व व्रतों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और गम्भीरता पूर्वक विचार करने के बाद प्रवेशक / अणुव्रती / विशिष्ट अणुव्रती बन रहा हूँ / बन रही हूँ। मैं इस आन्दोलन के व्रतों व नियमों का विधिवत् पालन करता रहूँगा / करती रहूँगी।

दिनांक ________________ हस्ताक्षर

पूरा नाम ________________

पिता या पति का नाम ________________

जाति ________ आयु ________ व्यवसाय ________

स्थाई पता ________________

____

बर्तमान पता ________________

हमें अपने देश का मकान बनाना है। उसकी बुनियाद गहरी होनी चाहिए। बुनियाद यदि रेत की होगी तो ज्यों ही रेत ढह जायेगी, मकान भी ढह जायेगा। गहरी बुनियाद चरित्र की होती है। देश में जो काम हमें करने हैं, वे बहुत लम्बे-चौड़े हैं। इन सबकी बुनियाद चरित्र है। इसे लेकर बहुत अच्छा काम अणुव्रत-आन्दोलन में हो रहा है। मैं मानता हूँ—इस काम की जितनी तरक्की हो, उतना ही अच्छा है। इसलिए मैं अणुव्रत-आन्दोलन की पूरी तरक्की चाहता हूँ।

—जवाहरलाल नेहरू
(स्व० प्रधान मंत्री)

●

अणुव्रत का अर्थ है—प्रत्येक व्रत का अणु से लेकर सब व्रतों का क्रमशः बढ़ता हुआ पालन। उदाहरण के लिए कोई आदमी जो अहिंसा और अपरिग्रह में विश्वास तो रखता है; लेकिन उनके अनुसार चलने की ताकत अपने में नहीं पाता, इस पद्धति का आश्रय लेकर किसी विशेष हिंसा से दूर रहने या एक हद के बाहर और किसी खास ढंग से संग्रह न करने का संकल्प करेगा और धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा। ऐसे व्रत अणुव्रत कहलाते हैं।

—किशोरलाल घ० मश्रुवाला

अणुव्रत साहित्य

1. नैतिक संजीवन
2. अणुव्रत दर्शन
3. अणुव्रत जीवन-दर्शन (हिन्दी-अंग्रेजी)
4. अणुव्रत विचार-दर्शन
5. अणु से पूर्ण की ओर
6. नवनिर्माण की पुकार
7. प्रेरणा-दीप (हिन्दी-अंग्रेजी)
8. अणुव्रत की ओर भाग १,२
9. नैतिकता की ओर
10. अणुव्रत-विचार
11. अणुव्रत दृष्टि
12. अणुव्रत दिग्दर्शन (हिन्दी-अंग्रेजी)
13. प्रगति की पगडंडियां
14. विचारकों की दृष्टि में—अणुव्रत-आन्दोलन
15. मानवता का मार्ग—अणुव्रत-आन्दोलन
16. अणुव्रत-क्रांति के बढ़ते चरण (हिन्दी-अंग्रेजी)
17. मैत्री-दिवस [अंग्रेजी]
18. भौतिक प्रगति और नैतिकता
19. अणुव्रत-आन्दोलन और विद्यार्थी वर्ग
20. ज्योति के कण
21. अणुव्रत नियमावली [अंग्रेजी]
22. उद्बोधन
23. आह्वान
24. जागरण
25. विश्वशान्ति और अणुव्रत
26. प्रश्न और समाधान